स्त्री का पत्नीकरण

सिगमंड फ्रायड का मनोविश्लेषणवाद

B.A.-II

1

– Dr. B. Kr.

मन के दो पहलू हैं -

(A) आकारात्मक पहलू - (i) इड, (ii) इगो, सुपर इगो.

(B) गत्यात्मक पहलू (i) चेतन, (ii) अर्धचेतन (iii) अचेतन.

(A) आकारात्मक पहलू -

(i) इड - यह पूर्णतः अचेतन होता है. यह सुख के सिद्धांत पर कार्य करता है। यह लिबिडोनल होता है। इसमें लाइफ इंस्टीन्क्ट होता है - जिसे इरोज कहा जाता है - जिसके द्वारा हम अच्छे कार्य करते हैं और डेथ इंस्टीन्क्ट होता है जिसे थानाटोस कहते हैं - इसके कारण हम नाकारात्म कार्य करते हैं।

(ii) इगो :- यह वास्तविकता के सिद्धांत पर कार्य करता और यह चेतन है। इगो, ईड तथा सुपर ईगो के बीच सेतू का कार्य करता है।

(iii) सुपर ईगो - यह धर्म एवं नैतिकता के सिद्धांत पर कार्य करता है। यह इड के सुख के सिद्धांत को बहुत हद तक धर्म, नैतिकता एवं समाजिकता के आधार पर रोकता है।

(3) गत्यात्मक पहलू :-

(i) चेतन मन → चेतन मन का संबंध वर्तमान से रहता है। यह मन के के कुल भाग का 1/10 वाँ भाग होता है. चेतन के द्वारा हम किसी विषय वस्तु को याद कर सकते हैं अथवा सीखे हुए विषय- वस्तु को अभिव्यक्त कर सकते हैं।

(ii) अर्द्धचेतन मन :- जब हम किसी सीखे हुए विषय- वस्तु को ~~लाख~~ कोशिश करने के बाद ~~भी~~ अभिव्यक्त कर पाते है तो इसे अर्द्धचेतन मन कहते हैं। इसी मन के कारण हम अटकते हैं, ~~ब~~भूलते हैं।

(iii) अचेतन मन - यह पूरे मन का 9/10 वाँ भाग होता है। इसमें दमित इच्छा, अतृप्त इच्छा, काम शक्ति का भंडार रहता है। जब हम किसी विषय - वस्तु के बारे में लाख कोशिश करने के बाद भी अभिव्यक्त नहीं कर पाते है तो ऐसा अचेतन मन के कारण होता है। अचेतन मन में जीवन प्रवृति रहता है जिसके कारण हम रचनात्मक अथवा साकारात्मक कार्य करते है। जब व्यक्ति द्वारा नाकारात्मक कार्य किया जाता है तो इसे मृत्यु प्रवृति कहते है।